मनश्चिकित्सा / PSYCHOTHERAPY

पिछले कक्षा में हमने मनश्चिकित्सा प्रविधियों के प्रमुख कारणों को जाना, और आगे :–

2. सम्मोहन (Hypnosis) :– सम्मोहन शब्द का उपयोग सर्वप्रथम ब्रेड (Braid) महोदय ने किया। ब्रेड से पूर्व मैसमर (Mesmer) ने भी सम्मोहन अवस्था की चर्चा की थी, परंतु उस समय में इस यह विधि अधिक प्रसिद्ध न हो सकी। ब्रेड के बाद शारकॉट ने इस विधि का उपयोग हिस्टीरिया के रोगियों की चिकित्सा में किया और आधुनिक समय में इसका उपयोग एक मुख्य चिकित्सा - विधि के रूप में किया जाने लगा। क्लेइन (Klein) के अनुसार, आज मानसिक रोगियों की चिकित्सा की प्रायः सभी प्रविधियों में सम्मोहन विधि का उपयोग किसी-न-किसी-रूप में किया जाता है।

सम्मोहन का अर्थ (Meaning of Hypnosis) :– सम्मोहन वस्तुतः कृत्रिम ढंग से उत्पन्न मोहावस्था अथवा अर्ध-समाधि (State of trance) की अवस्था है। इस अवस्था की प्रधान विशेषता यह है कि सम्मोहित व्यक्ति में संसूचनशीलता (Suggestibility) का गुण अधिक होता है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति बिना किसी संकोच के चिकित्सक के निर्देश का पालन करता है। सम्मोहित व्यक्ति की अपनी इच्छाशक्ति लुप्त हो जाती है। अतः वह सम्मोहक (Hypnotizer) की बातों का अनुसरण करने हेतु विवश रहता है। रोगी को सम्मोहन की अवस्था में लाने के लिए चाहे किसी भी प्रविधि का उपयोग किया जाए, प्रायः सभी प्रविधियों में निम्नलिखित तत्व आवश्यक रूप से पाए जाते हैं–

Scanned with CamScanner

(क) व्यक्ति (रोगी) का सहयोग प्राप्त करना और सम्मोहन के प्रति उसका मानसिक भय दूर करना।

(ख) रोगी को सरल और आरामदेह स्थिति में बैठाना, ताकि वह पूर्ण रूप से विश्राम या शिथिलता की अवस्था में हो जाए।

(ग) रोगी का ध्यानकेन्द्र संकुचित करना और उसका ध्यान किसी निर्दिष्ट स्थान या बिन्दु पर केन्द्रित करने हेतु प्रेरित करना, जैसे :— किसी चमकीली वस्तु पर एकटक देखने को कहना या आँखे बन्द करके केवल सम्मोहक की वाणी पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कहना।

(घ) प्रभावित संसूचन द्वारा रोगी की क्रियाओं और विचारों को निर्देशित करना।

प्रत्येक व्यक्ति या रोगी को सम्मोहित नहीं किया जा सकता। साथ ही, सम्मोहन की प्रगाढ़ता (Depth) में भी अन्तर होता है। आधुनिक अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि प्रायः प्रगाढ़ सम्मोहन की स्थिति चिकित्सा के दृष्टिकोण से अत्यधिक उपयोगी होती है।

सम्मोहन की अवस्था में घटनेवाली घटनाएँ चिकित्सा के दृष्टिकोण से विशेष महत्व होती हैं :—

1. विगत स्मृतियों के अनुभवों का प्रत्याह्वान.
2. आयु- प्रतिगमन
3. स्वप्नों की उत्पत्ति
4. पश्चात - सम्मोहनात्मक संसूचक।

इनका वर्णन किया जा रहा है :—

1. विगत स्मृतियों के अनुभवों का प्रत्याह्वान (Recall of Past memory experience) :— सम्मोहन की अवस्था में

विगत जीवन की दमित या भूली स्मृतियाँ और (संवेग) आसानी से पुनः याद आने लगते हैं। इससे रोगी की दमित अतृप्त इच्छाओं, मानसिक संघर्षों आदि के विश्लेषण में चिकित्सक को सहायता मिलती है तथा रोगी के अन्तर्द्वंद (Conflict) को दूर होने का मार्ग प्रशस्त होता है।

2. आयु-प्रतिगमन (Age regression) :— सम्मोहन की अवस्था में यदि रोगी को यह कहा जाए कि वह अब 6 वर्ष का बालक है तो रोगी इसे सत्य मानकर 6 वर्ष के बालक जैसा व्यवहार करने लगता है। इससे चिकित्सक को रोगी के मानसिक प्रतिगमन को समझने में सहायता मिलती है।

3. स्वप्न उत्पत्ति (Dream induction) :— सम्मोहन की अवस्था रोगी को किसी खास विषय पर स्वप्न देखने को कहा जाता है। स्वप्नों के विश्लेषण से रोगी की द्वंद का पता चलता है।

4. पश्चात-सम्मोहनात्मक संसूचन (Post-hypnotic suggestion) सम्मोहन की अवस्था में सम्मोहक द्वारा दिए गए परामर्श, विचार, भाव इत्यादि का प्रभाव सम्मोहन के बाद भी रहता है हालाँकि रोगी को इनके उद्गम (Source) का पता नहीं रहता।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि सम्मोहन की अवस्था वस्तुतः सम्मोहक के संसूचनों का परिणाम है।

Next day

Hrishi Kesh Lal
Deptt- Psychology
B.M.C. Rahika

Scanned with CamScanner